व्यथा नहीं व्यवस्था करो

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

संसार एक रंगमंच है। इस संसार में मानव अपने कर्म के अनुसार सुख और दुःख भोगता है। सुख में न तो बहुत ही प्रसन्न होना चाहिए और दुःख में अधिक घबड़ाना नहीं चाहिए। चक्र के पहिये की तरह सुख और दुःख जीवन में आते जाते रहते हैं। व्यथा काल्पनिक है और व्यवस्था प्रतिष्ठित है। चिन्ता करने से व्यक्ति अवसादग्रस्त हो जाता है। वह क्षीणकाय हो जाता है। उसकी सोचने विचारने की शक्ति क्षीण हो जाती है। इसलिए व्यथा नहीं करनी चाहिए। किसी भी प्रकार के संकट के आने पर उसको दूर करने का उपाय सोचना चाहिए। घबड़ाहट में समय बिताने से कोई लाभ नहीं। मानव जीवन में परिस्थितियों की प्रताड़ना है। परिस्थितियों का डटकर सामना करना चाहिए। विकास के लिए योजना बनानी चाहिए और वह योजना समयबद्ध होनी चाहिए। बीच–बीच में कार्य की समीक्षा होनी चाहिए और यह देखना चाहिए कि प्रगति समयबद्ध हो रही हैं कि नहीं। यदि बीच में कोई बाधा उत्पन्न हो तो उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

चिन्तन विधेयात्मक होना चाहिए। नकारात्मक चिन्तन समय को बर्बाद करता है तथा विपरित दिशा में शक्ति को खर्च करता है। जिससे जीवन में व्यथा ही व्यथा उत्पन्न होती है। व्यथा को छोड़कर व्यवस्था पक्ष पर अधिक ध्यान देना चाहिए। व्यवस्था से कार्य सिद्ध होता है। चाहे व्यक्ति विशेष की बात हो या संस्थाओं की या सरकार की सभी एक व्यवस्था और नियोजित ढ़ंग से कार्य करते है तभी विकास और प्रगति होती है। सरकार देश के विकास के लिए अनेक कार्य करती है। पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से विकास का ताना–बाना बुना जाता है। जिस समय देश को जिसकी आवश्यकता होती है योजनाओं में उन्हीं को अधिक महत्व दिया जाता है। समय–समय पर उसकी समीक्षा भी होती रहती है। जिसका परिणाम यह होता है कि कार्य सुचारु रूप से चलता रहता है।

सरकारें जब सड़क निर्माण की योजना तैयार करती हैं तो उसके विविध पक्षों पर चिंतन करके एक व्यवस्थित कार्य योजना बनाई जाती है। इंजीनियर, सामान, ठेकेदार, मशीनें और अन्य आवश्यक कार्यों की व्यवस्था की जाती है। भूमि अधिग्रहण, किसानों को दिये जाने वाले मुआवजे की राशि का आकलन बीच में पड़ने वाले पुल आदि के खर्च का आकलन करके राशि का आवंटन सरकार के द्वारा किया जाता है। यदि समयबद्ध कार्य किया जाता है तो निश्चित समय में योजना पूरी हो जाती है। इसके साथ ही साथ व्यय भी कम होता है। यदि समयबद्ध कार्य न किया गया तो योजना पर अधिक व्यय होता है। धनराशि अधिक खर्च करनी पड़ती है। व्यवस्था के लिए एक नवीन रचनात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए। धन जन की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। समय का नियोजन और निरीक्षण के द्वारा योजनाबद्ध तैयारी करके कार्य पूरा किया जाना चाहिए।

केवल चिन्तन ही नहीं बल्कि चिन्तन को कार्यरूप में परिणत करके ही मंजिल को प्राप्त किया जा सकता है। कार्य को करने के लिए चिन्ता की जरूरत नहीं है। कार्य को पूरा करने के लिए चिन्तन की आवश्यकता होती है। उसके लाभ और हानि के परिणामों पर विचार कर लेना चाहिए। यदि लाभ है तो किसी से पूछने की कोई अपेक्षा नहीं कार्य शुरू कर देना चाहिए। यदि नुकसान दिखाई दे रहा हो तो उसके कारणों की खोज करनी चाहिए की कहां कमी है। चिन्तन करके आगे बढ़ना चाहिए। नयी योजना और कार्य के लिए चिन्तन आवश्यक होता है। दूसरे कार्य की व्यवस्था करनी चाहिए न कि व्यथा करके बैठ जाइये। व्यवथा को नहीं करना चाहिए। व्यवस्था को सुन्दर ढ़ंग से संचालित करना चाहिए। कई बार ऐसा होता है, आस–पास और अपने निजी व्यक्तियों को खुश करने के लिए लोग झूठी प्रशंसा करते है। लेकिन यह कार्य ठीक नहीं है। प्रशंसा के स्थान पर सही प्रस्तुति को कार्यरूप दे। प्रशंसा सुनने में अच्छी लगती है किन्तु उसके कोई परिणाम नजर नहीं आते। व्यक्ति स्वयं प्रशंसा से अपने आपका गलत मूल्यांकन कर बैठता है। इसलिए मिथ्या प्रशंसा ठीक नहीं है।

किसी कार्य को प्रारंभ करिये तो उसे पूरे मनोयोग से करो। पूरी शक्ति और चेतना से उसे पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। मनोयोग से किया गया कार्य सफलता प्रदान करता है। इससे मन की एकाग्रता तो सधती ही है, साथ ही कार्य में कौशल भी आता है। कुशलता से

किया गया कार्य सुन्दर और श्रेष्ठ होता है। किसी भी कार्य को करते समय निन्दा और प्रशंसा दोनों हो सकती है। जिस कार्य की प्रशंसा या आलोचना न हो, वह कार्य श्रेष्ठ कैसे हो सकता है? आलोचना भी व्यक्ति को सोचने पर मजबूर कर देती है। आलोचना से उदास रहने वाला जीवन में सफल नहीं हो सकता।

जो व्यक्ति आलोचना से कुछ सीख नहीं लेता वह गतिशील नहीं हो सकता। कोई भी विद्यार्थी जब प्रतियोगिता के क्षेत्र में आता हैं तो उसे सफलता और असफलता दोनों मिलती है। यदि असफलता से घबड़ाकर वह बैठ जाये और अध्ययन करना बंद कर दे तो उसका सम्पूर्ण जीवन ही नष्ट हो जायेगा। यदि असफलता को सीढ़ी बनाकर वह चढ़ता जाये तो निश्चित ही उसे एक दिन सफलता प्राप्त होगी और उसके जीवन का निर्माण भी हो जायेगा। समस्याओं को जीतना चाहिए। समस्याओं से भागना नहीं चाहिए।